अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका

दिसंबर 2016

रेशम किरण

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
(आई एस ओ 9001 : 2008 प्रमाणित)
केंद्रीय रेशम बोर्ड (वस्त्र मंत्रालय - भारत सरकार)
मैसूर - 570 008

रेशम किरण

खंड - 5 अंक 1 दिसंबर 2016

संरक्षक
डॉ. वी. शिवप्रसाद

संपादक मंडल
श्रीमती वी. जयश्री
श्रीमती शचि. के
डॉ. विनीत कुमार

मुख पृष्ठ, प्रबंधन व सज्जा
श्रीमती वसंता कुमारी वी सी

पत्र व्यवहार
संपादक
रेशम किरण,
केंद्रीय रेशम उत्पादन
अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
संस्थान, श्रीरामपुरा,
मैसूर 570 008

इस अंक में

निदेशक की कलम से		2
संपादकीय		3
अधिक कोसा उपज एवं रेशम उत्पादकता के लिए नए द्विप्रज रेशमकीट संकर एस 8 x सी एस आर 16	डॉ. वी. शिवप्रसाद एवं अन्य	4
मल्विंग और शहतूत की खेती में उसकी उपयोगिता	विनोद कुमार यादव एवं अन्य	6
ऐसी है मेरी बिटिया	डॉ. डी.डी. शर्मा	8
पूछूँ तो किससे . . . ?	ई राजलक्ष्मी	8
रेशम उद्योग क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी	डॉ वीरण्णा गौड़ा	9
अर्जून साल वृक्ष बैर लता पै प्रेम प्रणित कुछ जोड़ी	बेद नारायण सिंह	10
हिंदी को एक दिन : आखिर क्यों?	सुबोध कुमार सिंह	11
दाना माज़ी - 4 जी युग के माज़ी	शचि के	13
शिक्षा का महत्व	वसंता कुमारी वी सी	14
संस्थान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा रिपोर्ट		15
संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट		16
अधीनस्थ कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट		17

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

बिक्री के लिए नहीं । केवल आंतरिक परिचालन के लिए

निदेशक की कलम से .....

राजभाषा को समर्पित, संस्थान की गृह पत्रिका रेशम किरण का यह अंक विमोचित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है । कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति उन्मुख करना इसका उद्देश्य है । इसमें प्रकाशित अधिकांश रचनाएँ अहिन्दी भाषियों द्वारा लिखित है । उन्होंने अपने विचारों को हिंदी के माध्यम से व्यक्त करने का सराहनीय प्रयास किया है । आशा है कि इससे प्रेरित होकर वे कार्यालयीन काम में भी हिंदी का प्रयोग करेंगे ।

आज हमारा देश भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बल पर विश्व में आर्थिक शक्ति बनकर उभर रहा है । इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं को विज्ञान का वाहक बनना है । रेशम उत्पादन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर साहित्य सभी भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी में उपलब्ध है । इस पत्रिका में भी रेशम उत्पादन अनुसंधान पर लिखित लेखों को सम्मिलित किया गया है । यह पत्रिका रेशम उत्पादन ज्ञान का प्रसार करने तथा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी ।

वी. शिवप्रसाद

(डॉ वी. शिवप्रसाद)

संपादकीय .....

भारत जैसे बहुभाषी देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य केवल हिंदी भाषा ही कर सकती है। आज़ादी के पहले ही यह सिद्ध हो चुकी है । इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया । स्वतंत्रता के बाद संविधान ने उसे राजभाषा का दर्जा दिया । तब से लेकर अब तक हिंदी के विकास के लिए अनेक प्रयत्न किए गए । संसार में ऐसी कोई भाषा नहीं जिसकी उन्नति में पद पद पर इतनी बाधाएँ पहुँचाई गई है । इन संघर्षों के बावजूद हिंदी आगे बढ़कर विश्व भाषा के स्तर पर पहुँच गई है ।

जीवन के हर क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए भाषा चाहिए । साधारण मज़दूर से लेकर अत्यंत विकसित मस्तिष्क के बुद्धिजीवि के दिभाग में समान भाव से विहार करने की शक्ति उसमें हो । आधुनिक ज्ञान विज्ञान को जन साधारण तक पहुँचाने की क्षमता होनी चाहिए । आज हिन्दी केवल साहित्यिक भाषा नहीं रही, बल्कि ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यापार सभी क्षेत्र में भी प्रवेश कर चुकी है।

हिंदी ने हर भाषा से शब्द लेकर अपना शब्द भंडार विस्तृत किया है । विदेशी कंपनियों ने अपने उत्पादों को बेचने के लिए हिंदी का सहारा लिया है । कंप्यूटर और मोबाइल पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा बढाई गई है । वेबसाइट, ई-मेल सभी जगह हिंदी का प्रयोग कर सकते है । इन सुविधाओं का उपयोग करते हुए हिंदी को आगे बढाना हमारा परम कर्तव्य है ।

रेशम किरण पत्रिका का यह अंक पाठकों को लिखने की ओर प्रवृत्त करा लेंगे तो हम कृतार्थ है।

(शचि के)
वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी)

अधिक कोसा उपज एवं रेशम उत्पादकता के लिए नए द्विप्रज रेशमकीट संकर एस 8 x सी एस आर16

डॉ.वी. शिवप्रसाद, डॉ.एन. मलरेड्डी एवं डॉ.एस एम मूर्ति

पिछले कई दशकों के दौरान किए गए परंपरागत प्रजनन विधियों के परिणाम स्वरूप कई उत्पादक रेशमकीट नस्ल एवं संकर विकसित हुए जिसके कारण भारत में अधिकतम रेशम उत्पादन करने में सफलता मिली। आजकल उत्पादित रेशम की मात्रा से अधिक उसकी गुणवत्ता पर बल दिया जा रहा है । केंरेअप्रसं, मैसूरु में काफी द्विप्रज नस्लों /संकरों का विकास किया गया और उन्हें कें रे बो द्वारा वाणिज्यिक उपयोग के लिए प्राधिकृत किया गया । तथापि केवल दो द्विप्रज रेशमकीट संकर सी एस आर 2 x सी एस आर 4 (एकल संकर) और द्वि संकर (सीएसआर 6 x सीएसआर 26) x(सीएसआर 2 x सीएसआर 27) क्षेत्र में लोकप्रिय है और देश भर में वाणिज्यिक तौर पर उपयोग किया जा रहा है । दक्षिणी राज्यों के कृषकों के साथ मिलकर व्यापक परीक्षण (प्राधिकरण उत्तर परीक्षण) करने के बाद एकल संकर सीएसआर 16 x सीएसआर 17 का वाणिज्यीकरण किया गया । इसके अतिरिक्त वर्ष 2013 में प्राधिकृत दो उत्पादक द्विप्रज संकर सीएसआर 50 x सीएसआर 51 (उच्च तापमान सहनशील) और द्वि संकर (सीएसआर 51 x सीएसआर 53) हाल में कृषकों के बीच लोकप्रिय हुए हैं । उच्च कच्चा रेशम वसूली/ कोसा कवच प्रतिशतता के लिए अधिक द्विप्रज संकर विकसित करने हेतु कें रे अ प्र सं, मैसूरु में लगातार प्रजनन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं ताकि वाणिज्यिक तौर पर रेंडिट्टा को कम किया जा सके । यद्यपि 22-24% कोसा कवच और 5.5-6.0 रेंडिट्टा के रेशमकीट नस्ल/संकर विकसित किए गए, फिर भी कृषकों से प्राप्त कोसा कवच प्रतिशतता केवल 20-21% और रेंडिट्टा 6.5 से 7.5 तक है । इससे साबित होता है कि कोसा कवच प्रतिशतता (2-3%) और रेंडिट्टा (1.0 से 1.5 तक) में कमी हुई । बेहतर कोसा कवच प्रतिशतता के फलस्वरूप अधिक कच्चा रेशम वसूली होती है और इससे रेंडिट्टा में कमी आती है जिसका प्रभाव धागाकरण लागत पर पड़ता है। इसको दृष्टि में रखते हुए उत्पादन नस्ल सीएसआर 27 के साथ बहि: संकरण कर एस 8 के कोसा एवं रेशम गुणवत्ता विशेषकों को सुधारते हुए एक नया उच्च उत्पादक एकल संकर एस 8 x सीएसआर 16 विकसित किया गया और इसके अनुसरण में उच्च उत्पादक विशेषकों के लिए क्रमबद्ध चयन किया गया ।

प्रयोगशाला निष्पादन

संकर	प्यूपीकरण (%)	उपज/ 10,000 लार्वे (कि ग्रा)	कोसा भार (ग्रा)	कोसा कवच भार (ग्रा)	एसआर (%)	कच्चा रेशम (%)	तंतु लंबाई (मी)	स्वच्छता (पी)
एस8 x सीएसआर16	96.0	21.0	2.12	0.502	23.7	19.5	1175	95
सीएसआर2 x सीएसआर4	95.6	19.14	2.01	0.472	23.5	18.5	1050	94

क्षेत्र निष्पादन

राज्य	परीक्षण की गई रो मु बी चकत्तों की संख्या	कृषक संख्या	कोसा उपज/100 रो मुबीचकते (कि ग्रा)	कोसा वजन (ग्रा)	कोसा कवच वज़न (ग्रा)	कोसा कवच प्रतिशतता
कर्नाटक	41400	239	76.5	1.875	0.414	22.1
आंध्र प्रदेश	11900	64	62.9	1.864	0.413	22.2
तमिलनाडु	10550	58	71.3	1.760	0.382	21.7
कुल/औसतन	63850	361	71.0	1.787	0.398	22.0
सीएसआर2 x सीएसआर4	32800	175	64.5	1.765	0.364	20.6

उच्च कोसा वजन (2.12 ग्रा), कोसा कवच वजन (23.75% की दर से 0.502 ग्रा) बेहतर तंतु (तंतु लंबाई: 1175 मी, धागाकरण क्षमता 90%, स्वच्छता 95 पी) बेहतर कच्चा रेशम वसूली (19-5%) और रैंडिट्टा एस 8 x सीएसआर 16 संकर के लक्षण है। 5.5 - 6.0 रैंडिट्टा वाले एकल संकर को लेकर दक्षिण भारत के कृषकों के साथ किए गए क्षेत्र परीक्षण आशाजनक हैं ।

एस 8 x सी एस आर 16 की मुख्य विशेषताएँ

- ❖ कृषकों द्वारा इस उत्पादक संकर का पालन करना आसान है ।
- ❖ अनुकूल महीने में कीटपालन ।
- ❖ हल्के नीले शरीर वाले चिन्हित लार्वे ।
- ❖ मध्यम आकृति और ग्रेन के चमकीले सफेद कोसे।
- ❖ उच्च कोसा कवच प्रतिशतता (23-24%)
- ❖ उच्च कच्चा रेशम वसूली (19-20%)
- ❖ बेहतर तंतु लक्षण ।
- ❖ अधिक तंतु लंबाई (1175 मी)
- ❖ धागाकरण क्षमता (90%)
- ❖ स्वच्छता (95 पी)
- ❖ कोसा उत्पादकों और धागाकारकों के लिए बेहतर आय ।
- ❖ कोसा उपज 70-75 कि ग्रा/100 रो मु बी च
- ❖ तंतु गुणवत्ता 2 ए - 3 ए
- ❖ रैंडिट्टा 5.0 - 5.5

सोच को बदलो, सितारे बदल जाएंगे
नज़र को बदलो, नज़ारे बदल जाएंगे
कश्तियाँ बदलने की जारूरत नहीं
दिशाओं को बदलो, किनारे बदल जाएंगे ।

मल्चिंग और शहतूत की खेती में उसकी उपयोगिता

विनोद कुमार यादव, डॉ. दासप्पा और डॉ. वी. शिवप्रसाद

मृदा को मल्चिंग करने की विधि सदियों से हमारी कृषि में अपनाई जा रहीं है । मल्चिंग की उत्पति जर्मन शब्द मोल्च से हुई है । जिसका मतलब होता है मृदा को फसल अवशेषों द्वारा ढकना । मुख्य रूप से मल्चिंग करने का उद्देश्य मृदा से वाष्प के रूप में उड़ने वाले पानी को बचना और उसको मृदा में संरक्षित करना।

मल्चिंग मुख्य रूप से एरिड और सेमी एरिड कृषि भू-भागों में पानी को संरक्षित करने में मुख्य भूमिका निभाती है ।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण हमारे आस-पास के वातावरण का तापमान दिन-व-दिन बढता जा रहा है । जिससे मृदा और पौधों से वाष्पोत्सर्जन की मात्रा बढ़ती जा रही है । इसका सीधा प्रभाव हमारी कृषि पर पड़ रहा है । जैसा कि हम जानते है, शहतूत की पाँच फसलें प्रति वर्ष ली जाती है । शहतूत की अच्छी पैदावार के लिए 6-7 दिनों के अंतराल में सिंचाई की जाती है । अच्छी पैदावार के लिए 85,000 गैलन प्रति हेक्टेयर पानी की आवश्यकता होती है । मानसून के मौसम में वर्षा कम होने के कारण दिनों-दिन पानी की कमी होती जा रही है । इस पानी की कमी को पूरा करने का कोई कारगर उपाय नहीं मिल रहा है । मल्चिंग के द्वारा वर्षा के पानी को मृदा में संरक्षित किया जा सकता है । शहतूत की अच्छी फसल ली जा सकती है । मल्चिंग से निम्न लाभ है ।

1. मृदा की जलधारण क्षमता में वृद्धि :

जैसा कि हम जानते है खेती के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है । क्योंकि एक वर्ष में 5-6 शहतूत प्ररोह की कटाई की जाती है । प्रति फसल के लिए 6-7 सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल की सिंचाई की माँग उसकी मृदा संरचना और मृदा उर्वरता पर निर्भर करती है । अगर शहतूत की दो युग्मक पंक्तियों के बीच में मल्चिंग किया जाता है तो इससे मृदा की जलधारण क्षमता की मात्रा बढ जाती है और मृदा से पानी की हानि होने से बचता है । क्योंकि मल्चिंग करने से मृदा संरचना में बदलाव हो जाता है और मृदा से पानी का वाष्पीकरण कम हो जाता है, जिससे कम पानी से भी अच्छी शहतूत की पैदावार प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है ।

2. मृदा पी एच और विद्युत चालकता:

किसी फसल के अच्छे उत्पादन के लिए मृदा पी एच और विद्युत चालकता का सामान्य होना अति आवश्यक है । यदि ये दोनों सामान्य नहीं होते हैं, तो मृदा बीमार मानी जाती है । शहतूत की खेती के लिए 6.5 -7.5 पी एच और <1 डेसी साइमन/मीटर विद्युत चालकता आवश्यक है । फसल अवशेषों और अन्य कार्बनिक पदार्थों को मृदा के ऊपर मल्च तथा उसके सडने के बाद विभिन्न प्रकार के अम्ल और क्षार निकलते है, जो मृदा के सुधार का काम करते है । इससे मृदा का पी एच और विद्युत चालकता सामान्य बना रहता है ।

3. एरिड और सेमी एरिड और असिंचित मृदा में मल्चिंग की उपयोगिता:

शहरीकरण का विस्तार हो जाने के कारण सिंचित भूमि की कमी होती जा रही है । किसान असिंचित मृदा में शहतूत की खेती करने के लिए

बाध्य होता जा रहा है । किंतु वर्षा की कमी के कारण एरिड सेमी एरिड और असिंचित भूमि में शहतूत की खेती करना बहुत कठिन होता जा रहा है। इसके लिए किसान वैकल्पिक विधि के बारे में विचार करता है । मल्चिंग एक ऐसी तकनीकी है, जिससे वर्षा द्वारा प्राप्त पानी को मृदा में संरक्षित करता है । इसके साथ-साथ मल्चिंग द्वारा मृदा में सूक्ष्म और स्थूल तत्वों की मात्रा बढ जाती है ।

4. पौधों की वृद्धि में सहायक :

फसल उत्पादकता बढाने ने के लिए विभिन्न तत्वों की आवश्यकता होती है । इन आवश्यक तत्वों की कमी के कारण पौधों की अच्छी वृद्धि नहीं होती है। फसल अवशेषों और कार्बनिक पदार्थों की मल्चिंग की जाने पर उसके सडने के उपरांत मृदा की उर्वरता में वृद्धि हो जाती है । इसके साथ-साथ तरह-तरह के जैविक एनजाइम निकलते है, जिससे शहतूत की अच्छी पैदावार होती है ।

5. खरपतवार को रोकने में सहायक :

शहतूत की अच्छी पैदावार के लिए खरपतवार की रोकथाम करना अति आवश्यक है । अगर खरपतवार का नियंत्रण सही समय पर नहीं किया जाता है तो फसल के उत्पादन में 20-30% की कमी आ सकती है। मल्चिंग करने से खरपतवार के बीजों का अंकुरण नहीं हो पाता है क्योंकि फसल अवशेषों और मृदा के बीच तापमान बढ़ जाता है । जो खरपतवार के बीजों को नष्ट कर देता है । इस प्रकार खरपतवार का नियंत्रण किया जा सकता है ।

6. मृदा से पोषक तत्वों के निक्षालन रोकने में सहायक:

शहतूत की अच्छी पैदावार के लिए विभिन्न जैविक और रासायनिक खादों और उर्वरकों का कम क्रमशः प्रयोग किया जाता है । मृदा में डाले गए पोषण तत्वों की कुछ ही मात्रा पौधों द्वारा उपयोग की जाती है । शेष तत्व मृदा से निक्षालित हो जाता है । जो पौधे द्वारा कभी उपयोग नहीं किया जा सकता है। किंतु मल्चिंग के द्वारा मृदा से तत्वों के निक्षालन को कम किया जा सकता है ।

7. मृदा की भौतिक संरचना पर प्रभाव :

शहतूत की अच्छी पैदावार के लिए मृदा की भौतिक संरचना का सामान्य होना अति आवश्यक है। जिससे पौधों के जड़ों के लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है और शहतूत की वृद्धि कारकों और पत्ती की पैदावार अच्छी होती है । मल्चिंग के द्वारा मृदा की भौतिक संरचना अच्छी हो जाती है, जिससे शहतूत के पौधों के पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है और शहतूत के पत्तों की उत्पादकता की वृद्धि हो जाती है ।

निदेशक व वैज्ञानिकगण, कें रे अ प्र सं, मैसूरु

कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए,
साधन सभी जुट जाएंगे, संकल्प का धन चाहिए ।

ऐसी है मेरी बिटिया

डॉ. डी.डी. शर्मा

मन आँगन में जब दीप जले तब आई मेरी बिटिया ।
माँ की ममता नाच उठी जब स्कूल से आई मेरी बिटिया ।।
पापा की बाहे झूला बनी जब आई मेरी बिटिया ।
ठुमक-ठुमक कर धूम मचाती, आंगन में जब खेले मेरी बिटिया ।।
सूना रहता घर जब तक, नहीं वापस आ जाती स्कूल से मेरी बिटिया ।
छोटे-छोटे हाथों से, काम बड़ा कर जाती मेरी बिटिया।
अच्छी शिक्षा ले माता-पिता से, उनका नाम बढ़ाती मेरी बिटिया ।
घर के सारे काम-काज में, माँ का हाथ बटाती मेरी बिटिया ।
हीन दृष्टि से ना देखों, लक्ष्मी का वरदान है मेरी बिटिया ।
बेटा तो चिराग एक घर का, दो-दो घर रोशन करती है मेरी बिटिया ।
आँखों में आँसू होठों पर सिहरन, फिर भी मुस्कराती मेरी बिटिया ।
सम्बधों का गुलदस्ता व रिश्तों के फूल खिलाती मेरी बिटिया।
ज़रा सी डाँट पर आँसुओं की धार बहाती मेरी बिटिया।
अपनी इच्छाओं का दमन कर, परिवार का फर्ज निभाती मेरी बिटिया ।
पापा-मम्मी ने नाजों से पाला, सब से महान है मेरी बिटिया ।
अनगिनत पुरस्कारों को जीत कर लाती मेरी बिटिया।
मम्मी-पापा की दुलारी मेरी बिटिया ।
तन, मन, धन कुर्बान कर, पापा की की इज्जत बढ़ाती मेरी बिटिया।
नाजुक सा दिल रखती है मेरी प्यारी बिटिया ।

वैज्ञानिक-डी (सेवानिवृत्त), कें रे अ प्र सं, मैसूरु

पूछूँ तो किससे . . . .?

श्रीमती ई. राजलक्ष्मी

मैं साडी पसंद करती हूँ, रेशम की,
लेना चाहती हूँ अब एक ।
लिया कई बार, सस्ता नहीं फिर भी,
मनभावन है बहुत;
लेकिन, टिकाऊ क्यों नहीं होती ?
पूछा मैं ने, साडी से ।

साडी बोली-मालुम नहीं मुझे ।
बुनाई या रंगाई में होगा गडबड,
कसूर नहीं मेरा

पूछा मैं ने बुनकर से
यों बोले, बुनकर -
दोष नहीं हमारा इसमें
पक्की है हमारी बुनाई,
होगी समस्या, धागाकरण में ।

पूछा मैं ने धागाकार से
यों बाले धागाकार -
मनोरम धागे के है हम साधक,
होगा कोसा गुणवत्ताहीन;
पूछा मैं ने, कोसे से
भरा मुस्कान, झट से बोले-गलती नहीं मेरी।
पूछो रेशमकीटों से, बनाया कोसा उसने ।

लेकिन, जीवित नहीं कीट अभी
निभाया कर्तव्य, लुटाया सर्वस्व
जो धुन के पक्के थे ।

वैज्ञानिक-डी, अ वि कें, गोबिचेट्टपालयम

रेशम उद्योग क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी

डॉ वीरण्णा गौडा

कृषि क्षेत्र में स्त्री पुरुष अनुपात पर किए गए कई अध्ययनों से साबित हुई कि भूमि तैयार करने से लेकर विपणन तक के सभी कार्यों में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है । आम तौर पर घरेलू कार्यों में निर्णय लेने में उनकी भागीदारी होने के बावजूद कृषि आधारित कार्यकलापों में निर्णय लेने में वे पिछड जाती है। सामाजिक रीतिरिवाजों और परंपराओं के नाम पर उनके सामने उपस्थित समस्याओं के कारण यह स्थिति बनी हुई है ।

रेशम उद्योग का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने पर रेशम उत्पादन विकास में महिलाओं की भूमिका स्पष्ट दिखाई देती है । रेशम उद्योग से गरीबों को स्थायी आय प्राप्त होती है, रोज़गार का अवसर मिलता है। महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर प्रदान करता है और उन्हें स्वतंत्र बनाता है। विश्लेषण के अनुसार कोसा निर्माण, कोसा पूर्व और कोसोत्तर कार्यकलापों में महिलाओं की सशक्त भूमिका है (60%) ।

भारत में एक लाख हेक्टेयर भूमि में शहतूत कृषि की जा रही है । तीन दक्षिणी राज्यों यथा कर्नाटक, आँध्र प्रदेश और तमिलनाडु में लगभग 5-6 लाख लोग कृषि कार्य में लगे हुए हैं । यह एक श्रम प्रधान उद्योग है । प्रति किलो ग्राम कच्चा रेशम उत्पादित करने में 11 व्यक्ति को रोज़गार मिलता है जिसमें 6 से अधिक कार्मिक महिलाएँ होती है । 60 लाख श्रमिकों में 35-50 लाख महिलाएँ हैं ।

संसार का सबसे बड़ा रेशम उत्पादन राष्ट्र भारत को रेशम के चारों किस्मों यथा शहतूत, तसर, एरी, मूगा के उत्पादन का गौरव प्राप्त हैं । कुल उत्पादित 95% रेशम में 89% शहतूत रेशम है । भारत के सभी राज्यों में रेशम उत्पादित किए जाते हैं लेकिन 50% रेशम उत्पादित करते हुए कर्नाटक राज्य इसमें अग्रणी है जिसे भारत का रेशम कटोरा माना जाता है ।

महिलाओं के लिए लाभकर रोजगार सृजित करने के अलावा खतरा रहित होने के कारण उनके लिए अच्छा विकल्प है इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि रेशम उद्योग में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । गोद लिए गाँवों में रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिए महिलाओं पर भी अध्ययन किया गया । अन्य क्षेत्रों में भी उदाहरण स्वरूप इसका उल्लेख किया जा सकता है ।

रेशम उद्योग क्षेत्र में महिलाओं के योगदान पर विचार करते समय उनकी भागीदारी में बाधा डालने वाली बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक है । इन बाधाओं को दूर करके महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई कार्यनीतियाँ और योजनाएँ प्रारंभ करने हेतु सोच-विचार करना आवश्यक है ।

जवाहरात और गहने जैसा रेशम भी विलासिता की वस्तु है इसलिए भारतीय समाज के उच्च एवं मध्यम वर्ग से इसका समर्थन और संरक्षण कराना होगा । पश्चिमी समाज के फैशनप्रिय शहरी काम काजी महिलाओं के बीच भारत का हल्का रेशम लोकप्रिय हो रहा है । भारतीय रेशम को बढ़ावा देने हेतु "रेशम उद्योग-महिलाओं के लिए और महिलाओं द्वारा" नारा लगाकर अभियान चलाना समय की माँग है ।

● वैज्ञानिक-सी, कें रे ज सं कें, होसूर ।

अर्जुन साल वृक्ष बैर लता पै प्रेम प्रणित कुछ जोड़ी

बेद नारायण सिंह

।

अर्जुन साल वृक्ष बैर लता पै प्रेम प्रणित कुछ जोड़ी
घन अकाश में छनक डाल पै
मचल रही कभी जोड़ी,
प्रणय प्रसंग में बिन्दु छोडकर
जीवन रतन गवाँया ।
विरहिन कछु पल-दिन गवांकर
अंडज शिशु जनाया ।।अर्जुन ।।

सह न सकी प्रियेतम की विरह को
मोह न शिशु की आया,
पिया विरह, प्रजनन क्लेश वश,
विरहिन पतिपुर धाया ।।अर्जुन ।।

॥

यही सती-सूत पला-बढ़ा जब,
पत्ता खा जीवन विताया,
सती-सुत-सुता गुहा के अंदर,
सवासन का योग लगाया ।।अर्जुन ।।

ध्यान टूटा, कछु गंध मिला तब ,
योगी, गुहा से बाहर आया,
काल चक्र के प्रणय पास में,
पूर्वज की कृति अपनाया ।।अर्जुन।।

साँप, उलूक, कौवा से बचकर
रेशम, कोया निर्माया,
पुरूष-नारी, भगवेत संत को,
सुद्ध वस्त्र तूही पहनाया ।।अर्जुन।।

बेट कहे रेशम की तितली,
तू क्या जीवन अपनाया,
तूझे कामी कहूँ, या निर्लिप्त कहूँ,
यही मेरी समझ नहीं आया ।।अर्जुन।।

● उच्च श्रेणी लिपिक, कच्चा माल बैंक, चाईबासा

हिंदी को एक दिन : आखिर क्यों ?

सुबोध कुमार सिंह

हर वर्ष 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । यह मात्र एक दिन नहीं बल्कि यह है अपनी भाषा को सम्मान दिलाने का एक मात्र दिन । उस भाषा को सम्मान दिलाने का, जिसे लगभग तीन चौथाई हिन्दुस्तान समझते है, जिस भाषा ने देश को स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका अदा की है । आज देश में हिंदी के हज़ारों न्यूज चैनल और अखबार निकलते है लेकिन जब बात प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान की होती है तो उनमें अव्वल दर्जे पर अंग्रेजी चैनलों को रखा जाता है । बच्चों को अंग्रेजी का ज्ञान बढाने हेतु स्कूलों में अंग्रेजी समाचार पत्रों को बाँटा जाता है । लेकिन हिंदी अखबारों को बाँटने में रूचि नहीं दिखाती ।

बात सिर्फ शैक्षिक संस्थानों तक सीमित नहीं है । जानकारों की नजर में हिंदी की बर्बादी में सबसे अहम रोल हमारी संसद का है । जब भारत आजाद हुआ तब हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाने की आवाजें उठी लेकिन इसे यह दर्जा नहीं दिया गया बल्कि मात्र राजभाषा बनाया गया। राजभाषा अधिनियम के तहत यह निर्धारित किया गया कि सभी सरकारी दस्तावेज और निर्णय अंग्रेज़ी में निकाले जाएंगे और उन्हें हिंदी में अनुवादित कर दिया जाएगा । सभी सरकारी आदेश और कानून हिंदी में जारी करके जरूरत पडने पर अंग्रेजी में अनुवाद किए जाने हेतु नियम बनाना था । हकीकत में उस दिन से लेकर आज तक 63 साल बीत जाने पर भी हिंदी अपना बजूद खोजने में असमर्थ रही है ।

सरकार को यह समझने की जरूरत है कि हिंदी भाषा सबको आपस में जोड़ने वाली भाषा है तथा इसका प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व भी है । अगर आज हम हिंदी की उपेक्षा करें तो कहीं एक दिन ऐसा न हो कि इसका वजूद ही खत्म हो जाए । समाज में इस बदलाव की जरूरत सर्वप्रथम स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों से होनी चाहिए। साथ ही देश के संसद को भी मात्र हिंदी पखवाड़े के दौरान इसका सम्मान करना नहीं बल्कि हर दिन इसे ही व्यावहारिक और कार्यालयी भाषा बनानी चाहिए।

जब एक बच्चा जन्म लेता है तब वह मां के गर्भ से ही भाषा सीखकर नहीं आता । पहला शब्द अपने माता-पिता की प्यार भरी वाणी से ही मिलता है। भारत में अधिकतर बच्चे सर्वप्रथम हिंदी में ही अपनी मां के प्यार भरे बोलों को सुनते हैं । हिंदी हिन्दुस्तान की भाषा है । यह भाषा है हमारा सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की तो इसे क्यों न आगे बढ़कर अपनाया जाए । अगर हम अब भी न जागे तो हिंदी भी एक दिन निश्चय ही विश्व की अनेक विलुप्त भाषाओं की श्रेणी में आ जाएगी ।

हिंदी हिंदुस्तान को एक सूत्र में बाँधती है। कभी गांधीजी ने इसे जनमानस की भाषा कहा था तो इसी हिंदी की खड़ी बोली को अमीर खुसरो ने अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करने का माध्यम भी बताया । कुछ तथाकथित राष्ट्रवादियों की वजह से हिंदी को आज उसका वह सम्मान नहीं मिला जिसकी उसे जरूरत थी।

जिस हिंदी को संविधान में सिर्फ राजभाषा का दर्जा प्राप्त है उसे कभी गांधीजी ने खुद राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी । सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए गांधीजी ने कहा था कि "हिंदी ही देश की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए" । लेकिन आजादी के बाद न गांधीजी रहे न उनका सपना । सत्ता में बैठकर भाषा और जाति के नाम पर राजनीति करने वालों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनने नहीं दिया ।

भारतीय पुनर्जागरण के समय भी श्री राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन और महर्षि दयानंद जैसे महान नेताओं ने हिंदी की खड़ी बोली का

महत्व समझते हुए इसका प्रसार किया और अपने अधिकतर कार्यों को इसी भाषा में पूरा किया । हिंदी के लिए पिछली सदी कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है लेकिन आज हिंदी को उसका हक दिलाने के लिए हमे फिर एक पुनर्जागरण की आवश्यकता महसूस होती है।

हम विदेशी भाषा के प्रभुत्व का नतीजा कई वर्षों से भोग रहे हैं । औपनिवेशिक शासन में हुकूमत करने वालों ने हथियार के तौर पर इस भाषा का उपयोग किया । आजादी के बाद भी शासन व्यवस्था में अंग्रेजी का बोलबाला कम नहीं हुआ है।

हिंदी दिवस पर आज हिंदी की महिमा का बखान किया जाता है । अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी शब्द के सामर्थ्य कम होने के आरोप थोपे जाते हैं। यह एक परंपरागत अनुष्ठान है जो 14 सितंबर को संपन्न होने के साथ ही बेमानी हो जाती है, लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध इससे ज्यादा सार्थक कारण हैं। अंग्रेजी से विरासत में आईएएस सेवा को जो शासक मनोवृत्ति मिली है उसका सबसे बड़ा नुकसान यह है कि लोकतंत्र अपाहिज होकर इस संवर्ग के अधिकारियों की वजह से घिसट रहा है । वे समाज के प्रति अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं निभाते । इस दुर्गुण ने उनके अंदर कोई रचनात्मकता नहीं रहने दी है । दीन-हीन जनता, शिक्षक, कवि, साहित्यकार व अन्य लोग उनके लिए उपेक्षणीय हैं । आज भाषा इन सत्ता केंद्रित अधिकारियों का शिकार बन गया । राजनीति से मुक्त कराने पर हिंदी को राजभाषा के प्रतिष्ठित पद पर बिठा सकते है ।

● कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आयकर आयुक्त का कार्यालय, मैसूरु ।

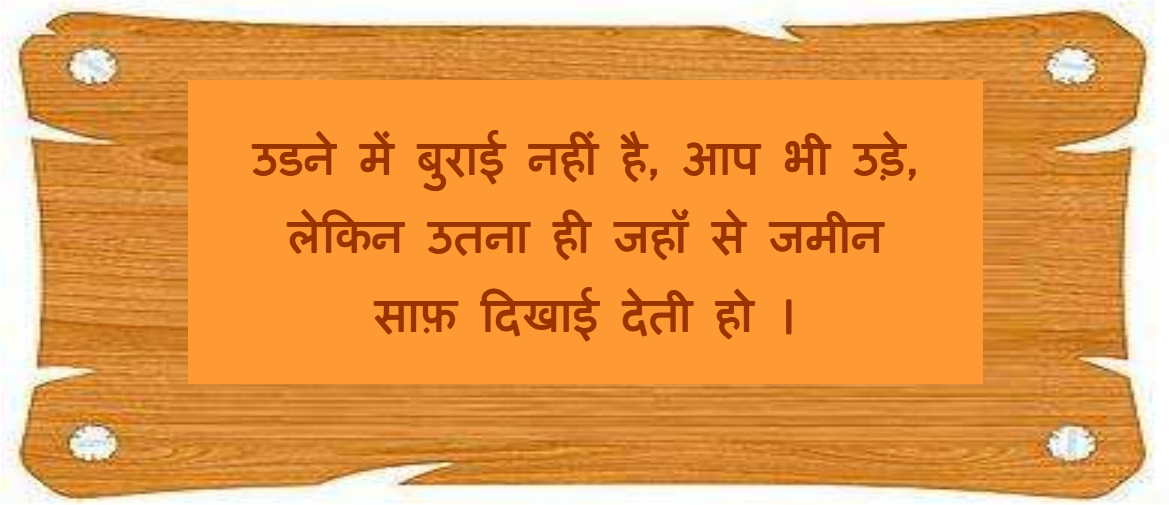

दाना माजी - 4 जी युग के माजी

के. शचि

गाँधीजी की दंडीयात्रा ने दुनिया को महत्वपूर्ण संदेश दिया । लेकिन स्वतंत्र भारत में एक मृत शरीर को लेकर दो व्यक्तियों ने केवल दस किलोमीटर की जो पदयात्रा की है तो राष्ट्र की दीनता का वास्तविक चित्र सामने आया, देश विदेशों के मानवीय संवेदनाओं को झखझोर कर दिया । वही है, उडीसा के गरीब आदमी दानामाजी की जीवन यात्रा ।

26 अगस्त को दानामाजी की पत्नी अमंगो माजी को क्षय रोग की इलाज कराने हेतु उडीसा के भवानीपट्टणा के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया । कलहांडी गाँव भूखमरी के लिए कुख्यात है। माजी का परिवार कलहांडी से 60 कि मी और भवानीपट्टणा से 25 कि मी दूर रहते है । वे अपनी पूरी कमाई लेकर बेटी के साथ भवानीपट्टणा के अस्पताल पहुँचे ।

डॉक्टर ने जाँच करके 500 रूपये की दवा लाने को कहा । पास के दुकान से दवा खरीदकर दे दिया । दो दिन बाद फिर दवा लेना पड़ा तो वे दवाये नहीं खरीद कर पाया डॉक्टर ने उन्हें बुरला मेडिकल कॉलेज ले जाने को कहा वहाँ तक पहुँचाने के लिए उनके पास पैसा नहीं था उसी दिन रात को उनकी मृत्यु हुई । मरने के पहले पत्नी ने उनसे पूछा "मेरी मृत्यु हो जाने पर क्या मेरा अंतिम संस्कार गाँव में किया जाएगा"? गाडी में लाश ले जाने हेतु उनके पास पैसा नहीं था । पत्नी की लाश को कपडे में बाँध कर कंधे पर रखकर 12 कि मी पैदल चल पडा । बहुत दूर लाश लेकर चलने पर विवश होकर उन्होंने अपनी बेटी से पूछा कि क्या हम उनका संस्कार रास्ते में ही कर दें ? लेकिन बेटी बिलखकर बोली "मरने के पहले हमने माँ को वादा किया था कि गाँव में ही उसका अंतिम संस्कार करेंगे ऐसा न करने पर माँ की आत्मा दुःखी होगी । आगे बढ़ते समय एक टी वी रिपोर्टर ने इस दृश्य को अपने कैमरे में कैद कर लिया और वे कही से ऐंबुलेंस लेकर आये तब तक वे दोनों 10 कि मी पार कर चुके थे । उसी ऐंबुलेन्स में शेष दूर जाकर गाँव में अंतिम संस्कार कर दिया । कुछ ही क्षण में यह खबर अखबार की सुर्खियों में आ गयी ।

उडीसा के हाइटेक मुख्यमंत्री इससे लज्जित हो गए । फेसबुक में लोगों ने अभिव्यक्त किया कि देश की वास्तविक क्रांति गरीबी उन्मूलन है वरना संचार क्रांति नहीं है। बहरिन के राजा ने आठ लाख रुपया देने का प्रस्ताव किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशक बाद भी हमारे देश के अधिकांश लोग समाज की मुख्यधारा से बहुत दूर, गरीबी में रह रहे है और निरक्षर है । विकास की दौड से निष्कासित बुनियादी सुविधाओं से वंचित इन लोगों को एक टूक रोटी के लिए अपने बच्चे को भी बेचना पडता है, यह आश्चर्य की बात है कि भारत को संसार के सबसे बडा लोकतंत्रिक राष्ट्र का गौरव प्राप्त है ।

भारत की वैज्ञानिक प्रौद्योगिक और आर्थिक प्रगति पर गर्व से चर्चा करते समय हम भूल जाते है कि इस 4 जी युग में हमारे देश में दानामाजी जैसे गरीब दलित लोग अनेक है उनका काला पदचिह्न भारत की गरीबी को सटीक आँका है ।

वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी)

शिक्षा का महत्व

वसंता कुमारी वी सी

शरीर पर पुराने कपड़े, हाथों में खोदने का सामान सिर पर धूप से बचने के लिए कपडा । सामने के कॉलेज के विद्यार्थियों को देखते हुए रमेश ने सोचा मैं क्यों ऐसा हो गया? मेरी इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार हैं? माता पिता, अध्यापक या दोस्त? फिर उसे महसूस हुआ कि नहीं उसकी इस अवस्था के लिए तो वह खुद ही जिम्मेदार है ।

रमेश सिद्दप्पा और चेन्नम्मा का दूसरा बेटा है पहली बेटी चंद्री । अपने दोनों सुंदर बच्चों को तैयार कर स्कूल भेजने में चेन्नम्मा को बहुत खुशी मिलती है । उनके पास अपना खेत नहीं था दूसरों के खेत में काम करके कुछ पैसे बच्चों की पढ़ाई के लिए बचाकर रखते थे ।

दोनो बच्चों का स्कूल में अच्छा नाम था । जब चंद्री मेट्रिक में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई तो सब बहुत खुश हुए पर आगे पढने के लिए बहुत दूर जाना था जो घर वाले नहीं भेज सकते थे । अट्ठारह साल होते ही सुंदर चंद्री का विवाह अच्छे पढे लिखे लडके के साथ कर दिया ।

रमेश पढ़ाई में अपनी दीदी से भी अच्छा था मेट्रिक में स्कूल में प्रथम आया । स्कूल के अध्यापकों को उसकी प्रशंसा करते हुए देखकर माता-पिता बहुत खुश हो गए ।

उसके माता-पिता हर कठिनाई को सहकर उसको पढाना चाहते थे । वे अपना खर्च कम करके उसको पढ़ाने के लिए तैयार हो गए ।

अध्यापकों की सलाह से माता-पिता ने अपने बेटे को कॉलेज के छात्रावास में दाखिल करवा दिया । उन्होंने उसे समझाया कि अच्छी तरह पढ़कर अच्छा नाम कमाना है । रमेश ने बहुत मेहनत की और प्रथम पी यू सी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई । लेकिन अगले वर्ष वह दूसरे छात्रों से कुछ प्रभावित होने लगा । जब उसने देखा कि दूसरे लड़के मोबाइल लेकर इधर उधर घूम रहे हैं तो उसके मन में भी मोबाइल लेने की इच्छा हुई ।

कॉलेज के बाद वह दोस्तों के साथ घूमकर खाने के समय छात्रावास आता था । अब उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था । जब वह गाँव आया तो उसने अपने माता-पिता से मोबाइल की मांग की। यह सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ और उन्होंने उसे समझाया कि वे गरीब लोग मोबाइल कैसे खरीद सकते है? लेकिन रमेश ने जब मोबाइल के लिए बहुत ज़िद्द की और कालेज न जाने की धमकी दी तब पिताजी ने उनके पास जमा पैसै से मोबाइल खरीद कर दिया । मोबाइल मिलने के बाद वह बहुत बदल गया । पढने में मन कम और मस्ती में बहुत मन लगता था । जब अध्यापकों ने यह देखा तब उन्होंने भी रमेश को बहुत समझाया पर वह नहीं समझा ।

परीक्षा के लिए तीन महीने ही बाकी थे । यह सोचकर रमेशा को बहुत डर लगता था, फिर भी वह दोस्त के साथ घूमने चला जाता था । पढ़ने के लिए पुस्तक खोलता तो पढ नहीं पाता और समझ नहीं पा रहा था, पुस्तक पकड कर ही सो जाता था । परीक्षा में प्रश्न पत्र देखते ही उसके होश उड गए किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं आ रहा था । परीक्षा के परिणाम को भी देखने नहीं गया, दोस्तों से पता चला कि सभी विषयों में अनुत्तीर्ण था। माता-पिता को जब इस बात का पता चला तो उनकी सारी आशा निराशा में बदल गई । रमेश के पिता ने जब देखा कि वह सभी विषयों में अनुत्तीर्ण हो गया है तो उन्हें लगा कि अब उसे आगे पढ़ाकर कोई लाभ नहीं । उन्होने उसकी पढ़ाई रोक दी और उसे अपने साथ काम के लिए ले जाने लगे । आज वह अपने कर्मों के कारण इस अवस्था में पहुँच गया। जब पिताजी ने अपने चिंतित बेटे को देखा तो वे भी दुखी हो गए लेकिन अब कोई कुछ नहीं कर सकता ।

उच्च श्रेणी लिपिक

संस्थान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा रिपोर्ट

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु में दिनांक 14.09.2016 को राजभाषा दिवस और राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह मनाया गया। डॉ वी. शिवप्रसाद, निदेशक, कें रे अ प्र सं, मैसूरु ने समारोह की अध्यक्षता की और डॉ. अशोक काम्बले, अध्यक्ष, कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूरु ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । समारोह का आरंभ डॉ. ज्ञानेश नंजप्पा, अनुसंधान अध्येता के प्रार्थना गीत से हुआ । संस्थान की उपनिदेशक (राजभाषा), श्रीमती वी. जयश्री ने समारोह के मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक तथा सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का समारोह में हार्दिक स्वागत करते हुए 01 सितंबर से 14 सितंबर 2016 तक आयोजित राजभाषा पखवाड़े के दौरान संचालित 10 विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यकलापों पर प्रकाश डाला ।

इस दौरान श्री के. एम. हनुमंतरायप्पा, माननीय अध्यक्ष, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु और डॉ. एच. नागेश प्रभु, सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु से प्राप्त राजभाषा संदेशों को पढ़कर सुनाया गया । संस्थान की उपनिदेशक (राजभाषा) ने हिंदी वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया ।

इसके बाद पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि और संस्थान के निदेशक के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया । साथ-साथ वर्ष 2015-16 में हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक शब्दों का प्रयोग करने पर 10 पदधारियों को पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अशोक काम्ब्ले, अध्यक्ष, कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूरु ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी देश के प्रेम की भाषा है । लोगों को एक सूत्र में बांधने का माध्यम हिंदी है। उन्होंने यह भी कहा कि भाषा सीखने के लिए उम्र कभी रूकावट नहीं होती । किसी भी उम्र में हम भाषा सीख सकते हैं । उन्होंने कहा कि इस हिंदी दिवस के अवसर पर सभी यह संकल्प लें कि वे राजभाषा के प्रति समर्पित रहेंगे।

अध्यक्षीय भाषण में डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक ने कहा कि हमारे संस्थान में अनुसंधान के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य भी प्रगति पर है । संस्थान के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को एकजुट होकर राजभाषा के कार्य को और आगे बढ़ाना है।

इस समारोह का संचालन श्रीमती वी. जयश्री, उपनिदेशक (राजभाषा) ने किया ।

अंत में श्रीमती के शचि, वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह सम्पन्न हुआ ।

समर्थन और विरोध केवल, विचारों का होना चाहिये किसी व्यक्ति का नहीं !

संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट

संस्थान के तकनीकी कर्मचारियों में हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करने और हिन्दी में कार्यालयीन काम-काज करने के लिए आवश्यक अभ्यास कराने तथा राजभाषा नीति की जानकारी देने के लिए संस्थान में दिनांक 20 सितंबर 2016 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 25 तकनीकी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर प्रशिक्षण पाया । दिनांक 20-09-2016 को पूर्वाह्न 10.30 बजे संस्थान के विस्तारण प्रभाग के सम्मेलन कक्ष में डॉ. अशोक काम्बले, आचार्य, हिंदी विभाग, कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर ने वाक्य रचना और व्याकरण; श्रीमती शशिकला, सहायक निदेशक (राजभाषा), भारत संचार निगम लिमिटेड, मैसूरु ने राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियम और टिप्पण - आलेखन पर व्याख्यान दिए और अभ्यास भी करवाया ।

अगली तिमाही में संस्थान के प्रशासनिक पदधारियों में हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करने और हिन्दी में कार्यालयीन काम-काज करने के लिए आवश्यक अभ्यास कराने तथा राजभाषा नीति की जानकारी देने के लिए संस्थान में दिनांक 27 अक्तूबर 2016 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 20 प्रशासनिक पदधारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर प्रशिक्षण पाया । दिनांक 20-10-2016 को पूर्वाह्न 10.30 बजे संस्थान के विस्तारण प्रभाग के सम्मेलन कक्ष में डॉ. भार्गवी आर गोपाल, सहायक निदेशक (राजभाषा), रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला, मैसूरु ने टिप्पण व आलेखन; श्रीमती रेखा अग्रवाल, सहायक प्रोफेसर, मैसूरु विश्वविद्यालय, मैसूरु ने टिप्पण और आलेखन और प्रशासनिक शब्दावली पर व्याख्यान दिए और अभ्यास भी करवाया ।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें नियमित कक्षाओं के बाद अंत में कार्यशाला में उपस्थित कर्मचारियों से कार्यशाला के संबंध में अपनी-अपनी राय और सुझाव देने के लिए कहा गया । सभी ने व्यक्त किया कि ऐसी कार्यशाला बार-बार आयोजित करने से कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करने में आसानी होगी और यह भी व्यक्त किया कि प्रतिदिन के कार्य में हिन्दी का प्रयोग करते समय अपनाई जाने वाली बातों तथा राजभाषा नियमों आदि की जानकारी प्राप्त हुई है ।

जिंदगी जो अभी आप जी रहे हैं,
यह भी बहुत से लोगो के लिए
एक सपना है ।

अधीनस्थ कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला / हिंदी पखवाड़ा रिपोर्ट

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सेलम

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सेलम कार्यालय में दिनांक 26.09.2016 को वैज्ञानिक-डी डॉ. एस. राजकुमार जी की अध्यक्षता में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती राजी.एस. कुरूप्प, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना एवं महा प्रबंधक का कार्यालय, भारत संचार निगम लिमिटेड, सेलम को आमंत्रित किया गया । इस कार्यालय के कुल 18 अधिकारियों/कर्मचारियों ने बडे उत्साहपूर्वक कार्यशाला में भाग लिया ।

श्रीमती राजी. एस. कुरूप्प, हिंदी प्राध्यापक ने प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला । उन्होंने राजभाषा हिंदी पत्राचार, टिप्पणी, शब्दावली, विभिन्न प्रकार के हिंदी शब्द और अन्य विषयों पर इस कार्यालय के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को व्याख्यान दिया ।

तदुपरांत केंद्र के वैज्ञानिक-डी डॉ. एस. राजकुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतिभागियों से हिंदी कार्यशाला में नियमित रूप से भाग लेकर उसका पूरा लाभ उठाने का अनुरोध किया । इस अवसर पर उन्होंने सभी अधिकारियों /कर्मचारियों से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने को कहा । अंत में कार्यशाला के प्रतिभागियों ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा कि उन्हे पत्र लेखन, टिप्पणी आदि संबंधी जानकारी मिली जो दैनिक कामकाज में बहुत उपयोगी होगी । श्री आर गोपिनाथन, कनिष्ठ अशुलिपिक ग्रेड-II ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, कोडति

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, कोडति बेंगलूरु के सभाभवन में दिनांक 01.09.2016 से 14.09.2016 तक केंद्र प्रभारी डॉ. जलजा एस कुमार, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस / पखवाड़े का आयोजन किया गया । पखवाडे का शुभारंभ डॉ. पी. के. अंबिका, वैज्ञानिक-डी के प्रार्थना गीत से हुआ । डॉ. पी सुधाकर, वैज्ञानिक-डी ने सभाभवन में उपस्थित मुख्य अतिथि श्रीमती सी. पी. जयश्री, उपनिदेशक (रा भा), वरिष्ठ अनुवादक शेख रम्तु बाषा और अध्यक्षा डॉ. जलजा एस कुमार, वैज्ञानकि-डी और सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया और अपने भाषण में कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है जो हमको एक सूत्र में जोड़ती है।

डॉ. जलजा एस कुमार, वैज्ञानिक-डी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि 14 सितंबर 1949 को भारत के संविधान ने हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया तबसे प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है । अत: संविधान के मुताबिक हिंदी में काम करना हम सब का कर्तव्य है । हिंदी में काम करने का संकल्प लेना चाहिए । इच्छाशक्ति हो तो हम सब हिंदी में काम कर सकते हैं । इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय रेशम बोर्ड के अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव के संदेश पढ़कर सुनाए ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया गया । अंत में केंद्र के तकनीकी सहायक डॉ. के सिन्हा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ पखवाडे का सफल समापन हुआ ।

बोर्ड की उदार हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारीगण

श्रीमती लीलावती, मल्टी टास्किंग स्टॉफ, कें रे अ प्र सं, मैसूरु

श्रीमती एस. विजयलक्ष्मी, उच्च श्रेणी लिपिक, कें रे अ प्र सं, मैसूरु

डॉ. न. बालाजी चौधरी, वैज्ञानिक-डी, अनुसंधान विस्तारण केंद्र उप-एकक, गिद्दलूरु

श्रीमती ई. राजलक्ष्मी, वैज्ञानिक-डी, उप रेशमकीट प्रजनन केंद्र, कूनूर

श्री आर. गोपीनाथन, कनिष्ठ आशुलिपिक, क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सेलम

श्रीमती पुष्पा भा गणबास, तकनीकी सहायक, अनुसंधान विस्तारण केंद्र उप-एकक, औरंगाबाद

श्रीमती अंजली प्रकाश नागे, तकनीकी सहायक, अ वि कें उप-एकक, औरंगाबाद

श्रीमती सुनंदा गजानन कासमपुरे, तकनीकी सहायक, अ वि कें, परभणी

श्रीमती निर्मला एस पोपलघट, तकनीकी सहायक, अ वि कें उप-एकक, परभणी

श्री एस.पी. इंगले, तकनीकी सहायक, अ वि कें उप-एकक, जालना

सभी को हार्दिक बधाई ।

अधिकारियों द्वारा दिए जानेवाले आदेश व वाक्यांश
ORDERS AND PHRASES BY OFFICERS

01	All concerned to note	सभी संबंधित नोट करें ।
02	Appropriate action may be taken	उपयुक्त कार्रवाई की जाए ।
03	Approved	अनुमोदित ।
04	As modified	यथा संशोधित ।
05	Attention is invited to . . .	. . . की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है ।
06	Comments may be called from . . .	. . . से टिप्पणी प्राप्त की जाए ।
07	Concurrence of . . . may be obtained	. . . की सहमति प्राप्त की जाए ।
08	Delay cannot be waived	विलंब को माफ नहीं किया जा सकता ।
09	Delay may be explained	देरी/विलंब का कारण बताया जाए ।
10	Delay should be avoided	विलंब न किया जाए ।
11	Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें ।
12	Facts given at page no. . may be seen	पृष्ठ सं. . पर दिए गए तथ्य देखे जाएँ ।
13	Facts of the case may be put up/ intimated	मामले के तथ्य प्रस्तुत किए जाएँ/सूचित किए जाएं ।
14	For general circulation	सामान्य परिचालन के लिए ।
15	He/they may be informed accordingly	उन्हें तदनुसार सूचित किया जाए ।
16	I agree/disagree	मैं सहमत/असहमत हूँ ।
17	Interim reply should be sent	अंतरिम उत्तर भेजा जाना चाहिए ।
18	Issue instruction forth with	तत्काल अनुदेश जारी किया जाए ।
19	Leave granted	अवकाश स्वीकृत ।
20	May be permitted	अनुमति दी जाए ।
21	On return from tour	दौरे से वापस आने पर ।
22	Orders may be complied with	आदेशों का अनुपालन किया जाए ।
23	Pending cases be disposed of early	अनिर्णीत मामले शीघ्र निपटाए जाएं ।
24	Please discuss	कृपया चर्चा करें ।
25	Reply should be sent in Hindi	उत्तर हिंदी में भेजा जाना चाहिए ।
26	Reply today/early/immediately/without delay	उत्तर आज ही/शीघ्र/तत्काल/अविलंब भेजें ।
27	Sanctioned	स्वीकृत/मंजूर ।
28	Seen and returned, thanks	देखकर वापस किया, धन्यवाद ।
29	Summary of the case may be put up	इस मामले का सार प्रस्तुत किया जाए ।
30	With best wishes/ with regards	शुभकामनाओं सहित/सादर ।

कर्मचारियों द्वारा लिखी जाने वाली टिप्पणी संबंधी वाक्य/वाक्यांश
Sentences/Phrases used in Notings by Staff

01	A brief Note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे प्रस्तुत है।
02	Acknowledgement has already been sent	पावती पहले ही भेजी जा चुकी है ।
03	Action has already been taken in the matter	इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है ।
04	Action has been taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की गई है ।
05	A list is placed below	सूची नीचे प्रस्तुत है ।
06	Approval may be accorded	अनुमोदन दिया जाए ।
07	Approved draft typed and put up for signature please	अनुमोदित प्रारूप/मसौदा टाइप करके हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है।
08	A revised draft memorandum is put up as desired by	..... के वांछितानुसार/की इच्छानुसार ज्ञापन का संशोधित परिशोधित/पुनरीक्षित मसौदा प्रस्तुत है ।
09	As required under the rules	जैसा कि नियमों के अधीन अपेक्षित है/हो ।
10	Case is resubmitted as directed on prepage	पूर्व पृष्ठ पर निदेशानुसार मामला पुनः प्रस्तुत है ।
11	Checked and found correct	जाँच की और सही पाया ।
12	Copy enclosed	प्रतिलिपि संलग्न है ।
13	Copy enclosed for ready reference	सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न ।
14	Copy forwarded for information/necessary action	सूचना/आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि अग्रेषित
15	Draft is put up for approval	मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
16	Draft reply is put up for approval	उत्तर का प्रारूप/मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
17	Early orders are solicited	शीघ्र आदेश देने का अनुग्रह करें ।
18	Facts given at page no..... may be seen	पृष्ठ सं. . . . पर दिए गए तथ्य देखें ।
19	Fair letter placed below for signature please	स्वच्छ पत्र हस्ताक्षरार्थ नीचे रखा गया है ।
20	For approval	अनुमोदन के लिए ।
21	For further action	अगली कार्रवाई के लिए ।
22	Orders are solicited	आदेशार्थ ।
23	Re-submitted please	पुनः प्रस्तुत ।
24	Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत ।
25	The proposal is quite in order	यह प्रस्ताव बिलकुल नियमानुसार है ।
26	The required papers are placed below	अपेक्षित कागज़ात नीचे रखे हैं ।
27	This is not admissible under rules	नियमों के अधीन यह स्वीकार्य नहीं ।
28	Necessary action may be taken	आवश्यक कार्रवाई की जा सकती है ।
29	Under initimation to this office	इस कार्यालय को सूचित करते हुए
30	For consideration	विचारार्थ ।

डॉ. जलजा एस कुमार, वैज्ञानिक-डी व अध्यक्ष हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन भाषण देते हुए ।

क्षे रे अ कें, सेलम का हिंदी पखवाड़ा समारोह

अनुसंधान विस्तारण केंद्र, चित्रदुर्ग में आयोजित हिंदी दिवस समारोह

संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला में श्रीमती शशिकला, सहायक निदेशक (रा भा) भा स नि लि, मैसूरु भाषण देते हुए,

प्रकाशक : डॉ वी. शिवप्रसाद, निदेशक, कें रे अ प्र सं, मैसूर